इकाई – 1

आगम साहित्य का सामान्य परिचय

अर्द्धमागधी आगम का परिचय

भारत के सांस्कृतिक इतिहास और विकास में आगमिक साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है और आगमिक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग अर्धमागधी साहित्य है। अर्धमागधी भाषा का विशेष महत्व इसलिए है कि जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर ने इसी भाषा में अपना परमहितकारी, लोक कल्याणकारी उपदेश दिया। उनके गणधरों ने भी इसका प्रचार-प्रसार इसी भाषा में किया। इस प्रकार, वर्द्धमान महावीर के उपदेशों का संग्रह कर उनके गणधरों ने जिन ग्रन्थों की रचना की, वह 'श्रुत' कहलाया और यही श्रुत आगे चलकर 'आगम' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अर्धमागधी भाषा में रचित आगम साहित्य को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है –
(1) बारह अंग (12 अंग) (2) 12 उपांग (3) छः छेद सूत्र (4) 4 मूल सूत्र, (5) 10 प्रकीर्णक और (6) 2 चूलिका। इस प्रकार, सम्पूर्ण आगम साहित्य 46 ग्रन्थों में व्यवस्थित किया गया है।

(2) अंग आगम साहित्य :

अंग आगम साहित्य की रचना अर्धमागधी भाषा में हुई है। अंग आगम साहित्य की संख्या 12 (बारह) है। जिसका सामान्य परिचय इस प्रकार है :–

(1) आचारांग सूत्र (2) सूत्र कृतांग सूत्र
(3) स्थानांग सूत्र (4) समवायांग सूत्र
(5) व्याख्या प्रज्ञप्ति (6) ज्ञातृधर्म कथांग
(7) उपासक दशांग (8) अन्तः कृदशांग
(9) अनुत्तरोपातिक दशाङ्ग (10) प्रश्न व्याकरण
(11) विपाक सूत्र (12) दृष्टिवाद

आचारांग सूत्र : (आयारंग)

अर्धमागधी आगम साहित्य में 'आचारांग सूत्र' का सर्वोत्कृष्ट स्थान है। यह प्राचीन आगम ग्रन्थ है। यह श्रुत स्कंध दो भागों में विभक्त है :— (1) प्रथम श्रुत स्कंध (2) द्वितीय श्रुत स्कंध। प्रथम श्रुत स्कंध में नौ अध्ययन हैं, जो (44) चौवालीस उद्देशकों में विभक्त है। द्वितीय श्रुत स्कंध (3) तीन चुलिकाओं और (16) सोलह अध्ययनों में विभाजित है। यह गद्य और पद्य दोनों में लिखा गया है।

प्रथम श्रुत स्कंध आचारांग :

प्रथम श्रुत स्कंध आचारांग निम्न नौ अध्ययनों में विभाजित है :—

(1) शस्त्र परिज्ञा : इसमें पृथ्वीकाय आदि जीवों की हिंसा का निषेध किया गया है।

(2) लोक विजय : इसमें अप्रमाद, अज्ञानी-स्वरूप, धन संग्रह का परिणाम, आशा-त्याग, पाप कर्म आदि का निषेध किया गया है।

(3) शीतोष्णीय :
इस अध्ययन में विरक्त मुनि स्वरूप, सम्यकदर्शी-लक्षण और कषाय-त्याग का प्रतिपादन किया गया है।

(4) सम्यक्त्व अध्ययन :
इसमें तीर्थंकर भाषित धर्म, अहिंसा, संयम-साधना आदि का विवेचन किया गया है।

(5) लोकसार :
इसमें जीवन शोधन की विभिन्न दिशाओं का निरूपण करते हुए कुशील-त्याग, संयमाराधना, चरित्तपालन एवम् तपश्चरण का कथन किया गया है।

(6) धूत्त अध्ययन :—
इस अध्ययन में परीषह-सहन, प्राणि हिंसा, धर्म में रति आदि विविध विषयों का उल्लेख किया गया है।

Scanned by CamScanner

7. महापरिज्ञा :

सातवें अध्ययन का नाम महापरिज्ञा तो निर्दिष्ट किया गया है, किन्तु उसका पाठ उपलब्ध नहीं है।

8. विमोक्ष :

इसमें परीषह-सहन, वस्त्रधारी का आचार, वस्त्र त्याग में तप, संलेखना की विधि, समाधिमरण आदि का प्रतिपादन किया गया है।

9. उपधान अध्ययन :

इसमें अहिंसा, संयम सहित तप आदि का उल्लेख करते हुए भगवान् महावीर की कठोर साधना पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय श्रुतस्कंध

द्वितीय श्रुतस्कंध में तीन चुलिकाएँ हैं, जो 16 अध्ययनों में विभाजित हैं। प्रथम चूलिका में 7 (सात) अध्ययन, द्वितीय चूलिका में 7 (सात) एवम् तृतीय में 2 (दो) अध्ययन हैं। प्रथम चूलिका के सातों अध्ययन में भिक्षु और भिक्षुणियों के आहार संबंधी नियमों का विस्तृत वर्णन किया गया है। द्वितीय चूलिका के सात अध्ययनों में स्वाध्याय संबंधी नियमों, मलमूत्र त्याग का निरूपण किया गया है। तीसरी चूलिका- भावना और विमुक्ति अध्ययन में महाव्रतों की पांच भावनाएँ एवं मोक्ष का विस्तृत कथन किया गया है।

इस प्रकार, मुनियों के आचार परिज्ञान के लिए 'आचारांग सूत्र' ग्रन्थ उपयोगी है।

2. सूत्र कृत्तांग सूत्र : (सुयगडंग)

अर्धमागधी भाषा में रचित दूसरा अंग आगम सूत्र कृत्तांग सूत्र है।

सूत्रकृत्तांग सूत्र दो श्रुतस्कंधों में विभाजित है। इसके प्रथम श्रुत स्कंध में 16 अध्ययन और द्वितीय श्रुत स्कंध में सात अध्ययन हैं।

Scanned by CamScanner